chapter. 2

द्वितीय अध्याय

हिन्दी मंचीय काव्य का वैशिष्ट्य, वाचन एवं गायन की विविध शैलियाँ, वर्ण एवं कथ्य

- हिन्दी मंचीय काव्य का वैशिष्ट्य्
- गायन एवम् वाचन की विविध शैलियाँ
  - लोक रागों के आधार पर "सस्वर गायन"
  - जनवादी सभा या समारोह में नारेबाजी के रूप में आह्वान गीतों का मंचीय पाठ
  - ओजपूर्ण वीर–रस की कविताओं का वाचन
  - चतुष्पदी कविताओं का ओजस्वी वाचन
  - गजल विधा पर लिखी कविताओं का वाचन
  - चतुष्पदी तथा परंपरित छंदों का वाचन
  - नवगीतों की नव विधा में गायन
  - हास्य और व्यंग्य प्रस्तुति

द्वितीय अध्याय

हिन्दी मंचीय काव्य का वैशिष्टय, वाचन एवं गायन की विविध शैलियाँ, वर्ण एवं कथ्य

हिन्दी मंचीय काव्य का वैशिष्टय्

विश्व में गीतों के श्रेष्ठतम कवि सम्मेलन का नाम है 'गीत चाँदनी' तरुण–समाज, जयपुर द्वारा यह कवि सम्मेलन प्रतिवर्ष शरदोत्सव के उपलक्ष शरद पूर्णिमा के समीपस्थ शनिवार को आयोजित किया जाता है। यह कवि सम्मेलन प्रतिवर्ष जयपुर स्थित विख्यात जय क्लब के उद्यान में ही आयोजित होता है। सम्मेलन रात आठ बजे से लेकर तब तक चलता है जब तक कि कवियों और श्रोताओं का मन नहीं भरे।

आज के दौर में गीत चाँदनी एक विलक्षण कवि सम्मेलन है। विगत वर्ष में कवि सम्मेलन व्यवस्थाओं में तड़क–भड़क तो बढ़ी है लेकिन कविताओं के स्तर में लगातार गिरावट आ रही है। ऐसे में यह कार्यक्रम एक प्रकाश स्तम्भ है, जिसे तरुण समाज प्रतिवर्ष पूर्ण निष्ठा के साथ आयोजित करता है अतः श्रोता भी यहाँ पूर्ण रूप से कविसम्मेलन में डूब जाने के लिए तत्पर रहते हैं। यहाँ गीतकार अपने श्रेष्ठतम गीतों का श्रेष्ठ पाठ करते रहे हैं। कुल मिलाकर गीत चाँदनी में गीतकारों आयोजकों और श्रोताओं में एक नैसर्गिक और आत्मीय तालमेल दिखाई देता है। शायद यही वह वजह है जो इस कार्यक्रम को हर वर्ष एक बेमिसाल ऊँचाई प्रदान करता है।

लटके–झटके, लफ्फाजी, टोंटबाजी से दूर गीत चाँदनी एक साफ–सुथरा, गम्भीर कवि सम्मेलन है। शुद्ध, साहित्यिक, अभिरुचिवाले श्रोताओं के सर्वथा अनुकूल एक ऐसा कवि सम्मेलन जिसमें कोई भी रचनाकार चुटकुले सुनाने की अथवा पूर्व नियोजित पारस्परिक नौंक–झौंक करने की हिमाकत कर ही नहीं सकता। जुमलेबाजी और अनर्गल बयानबाजी को श्रोता सिरे से खारिज कर देते हैं। श्रोताओं में सैकड़ों की संख्या में श्रेष्ठ कवि भी मौजूद होते हैं। 'गीत चाँदनी' की अस्मिता की रक्षा के लिए समस्त कवि, आयोजक एवं श्रोता सदैव–तत्पर रहते हैं। होता यह है कि संचालक बहुत सादगी के साथ गीतकार को प्रस्तुत करता है तथा गीतकार भी सीधे–सीधे गीत–पाठ शुरू कर देता है। प्रत्येक अच्छी पंक्ति पर श्रोता भरपूर दाद देते हैं। पंक्ति अगर और अधिक अच्छी हुई तो श्रोता पुनः पाठ करने का आग्रह करते हैं। कई श्रोता तो नोट्स लेने में ही मशगुल देखे जा सकते हैं। मंच और श्रोताओं में से किसी भी ओर से किसी भी प्रकार की अगम्भीरता और अभद्रता को स्थान मिलना संभव नहीं।

दरअसल गीत, हिन्दी कविता का प्राणतत्व और हिन्दी–काव्य का प्रतिनिधि स्वरूप है। छंदों के अनुशासन में भय पर सवार होकर काव्यानुभूमि जब अभिव्यक्ति पाती है तो उसका सौंदर्य अद्भुत होता है। कवि के मन से प्राणों में उठी अभिव्यक्ति का कुल गोत्र जब श्रोताओं के प्राणों में उठ रही अभिव्यक्ति से मिल जाता है तो संवेदनाओं के संगम का दुर्लभ योग उपस्थित होता है। 'गीत चाँदनी' में उन क्षणों को जीते समय कवियों और श्रोताओं को ऐसा अनुभव होता है कि जैसे वे प्रयाग में संगम में डुबकी लगाकर पुण्य लाभ प्राप्त कर रहे हों।

इस समय गुलाबी नगर जयपुर में का मौसम भी अपनी पूर्ण आभा में समावोर रहता है। इस गुलाबी मौसमी आभा से ही प्रतीत होता है कि इस शहर को क्यों गुलाबी नगर कहा जाता है। न उमस, न ठंडा, आकाश में लगभग पूर्णाकाल चंद्रमा से छिटकती हुई चांदनी में मौसम की नमी गीतपाठ के लिए आदर्श वातावरण बना देती है। यही वजह है कि इस कार्यक्रम से लाभान्वित होने के लिए श्रोता दूर–दूर से आते हैं। यहाँ के हर श्रोता की गीत चांदनी के लिए प्रतीक्षा गीत चांदनी से ही शुरू हो जाती है। कई बार तो सुधि श्रोता कवियों की टोक देते हैं कि इतने साल पहले आपने इस

गीत की इस पंक्ति को यों पढ़ा था अब शब्द बदल दिए हैं, किसे सही मानें? क्या कहने। ऐसे श्रोता तो भाग्यशाली कवियों और गीतकारों को ही नसीब होते हैं। हिन्दी, राजस्थानी और उर्दू के सभी समर्थ गीतकार इस आयोजन में अनेक बार काव्यपाठ कर चुके हैं। गीतकारों के लिए भी यह आयोजन एक कसौटी ही है।

पिछले तीन दशकों से हास्य कवि सम्मेलनों की लोकप्रियता आकाश छू रही है। कवि सम्मेलन के नाम पर हास्य कवि सम्मेलन का होना आम-सा हो गया है। दुनिया भर में इनका बोलबाला है। यों तो आए दिन कहीं न कहीं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन होता ही है लेकिन राजस्थान की राजधानी जयपुर में होली के अवसर पर तरुण समाज द्वारा 'महामूर्ख सम्मेलन' के नाम से आयोजित दुनिया के सबसे बड़े हास्य महोत्सव की बात ही कुछ और है।

इस हास्य महोत्सव की अनेक विशेषताएँ हैं। श्रोताओं की संख्या को आधार बनाएँ तो यह दुनिया का सबसे बड़ा हास्य कवि सम्मेलन है। इसे सुनने के लिए दूर-दूर से आयोजक एवं श्रोता आते हैं। कई प्रवासी राजस्थानी तो होली के अवसर पर भारत आने का कार्यक्रम ही 'महामूर्ख सम्मेलन' की तिथि को ध्यान में रखकर बनाते हैं। इस कवि सम्मेलन में हास्य कवियों की नई और पुरानी पीढ़ी का संगम होता है। पुरानी पीढ़ी के कवियों को यहाँ काव्य-पाठ करके प्रतिष्ठा मिलती है तो नई पीढ़ी के कवियों को पहचान। यही वह इकलोता कवि सम्मेलन है जिसमें पाठ की जाने वाली अधिकांश कविताएँ नई होती है। घिसी-पीटी हास्य कविताओं से ऊब चुके श्रोताओं के लिए यह कार्यक्रम ताजी हवा के झोंके जैसा ही है। 'महामूर्ख सम्मेलन' में अब तक काव्य पाठ कर चुके कवियों की पुनरावृत्ति पर नजर डालें तो स्वतः ही इस बात पुष्टि हो जाती है। इस कवि सम्मेलन में वे ही कवि अपना रंग जमा सकते हैं जिनमें हास्य की नई रचनाएँ सुनाने की सक्षमता है।

'महामूर्ख सम्मेलन' मुख्यतः एक हास्य कवि सम्मेलन है जो कवि सम्मेलन के पारम्परिक स्वरूप में ही श्रोताओं के समक्ष आयोजित एवं प्रस्तुत होता है। कई बार इसमें मिमिक्री व चुटकुलों के जरिये हास्य का सृजन करने वाले बड़े कलाकारों को भी आमंत्रित किया जा चुका है। जहाँ उन्होंने अपनी बेहतरीन प्रस्तुतियाँ भी दीं इसके बावजूद हास्य कवियों की मौलिक हास्य रचनाओं के

सामने वे श्रोताओं के हृदय पर अपनी स्थाई पहचान नहीं बना सके। ऐसे में चुटकुलों और मिमिक्री की तुलना में हास्य कवियों की अस्मिता को स्थापित करनेवाला यह अकेला हास्य कवि सम्मेलन है। हास्य कवियों की मौलिकता के महत्व की स्थापना शायद ही किसी दूसरे हास्य कवि सम्मेलन ने की हो।

जयपुर प्रोफाइल में इस कार्यक्रम का जिक्र है। इससे पता चलता है कि जयपुर शहर जिन विलक्षणताओं की वजह से दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है, उनमें प्रतिवर्ष होली के उपलक्ष्य में तरुण समाज द्वारा आजोजित 'महामूर्ख सम्मेलन' भी एक है। एक शहर के जीवन में किसी कवि सम्मेलन का इतना महत्वपूर्ण हो जाना कवि सम्मेलन विधा के लिए सचमुच गर्व का विषय है। इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता है कार्यक्रम के संयोजक विश्वम्भर मोदी की संयोजकीय निष्ठा। कवि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य लोगों के सामाजिक सरोकारों को बढ़ाते हुए सामूहिकता के आनन्य की अस्मिता को और अधिक निखारना भी है। यही वह वजह है कि बड़े-बड़े राजनेता तथा फिल्म स्टार भी इस कवि सम्मेलन का हिस्सा बनने की इच्छा व्यक्त करते रहते हैं। इस प्रकार यह हास्य-महोत्सव तरह-तरह से कवि सम्मेलन विधा के लिए आत्मगौरव के कारणों का सृजन करता है। ऐसे कार्यक्रम दुनिया के सभी भागों में होने चाहिए ताकि हिन्दी भाषा के नाम पर आयोजित होने वाले महोत्सवों की संख्या बढ़ सके।

''किसी भी कवि सम्मेलन को पहचान देने वाला एक प्रमुख तत्व है कवि सम्मेलन की अध्यक्षता। यही उसकी गरिमा की कसौटी भी है कि कवि सम्मेलन किसकी अध्यक्षता में हुआ? बाल कवि बैरागी बड़े गर्व के साथ बताते हैं, ''मैंने अपने जीवन में पहली बार काव्य पाठ उस कवि सम्मेलन में किया था जिसकी अध्यक्षता प. सूर्य नारायण व्यास ने की थी। वे पं. सूर्य नारायण व्यास, जिन्होंने हिटलर को बता दिया था कि आप आत्महत्या करोगे। लेकिन यह पचास-साठ साल पुरानी बात है। आज सब लोग यह तो जानते हैं कि कवि सम्मेलन किसके संचालन में हुआ लेकिन यह बात कोई नहीं जानता कि कवि सम्मेलन किसकी अध्यक्षता में हुआ? कारण साफ है कि व्यवसायिकता की अंधी दौड़ में किसे फुर्सत है जो इस बात पर ध्यान दे कि कहीं कवि सम्मेलन की पहचान और गरिमा की स्थापना करनेवाले प्रमुख तत्वों की अनदेखी तो नहीं की जा रही है।''[1]

कवि सम्मेलन आज एक मनोरंजक कार्यक्रम की तरह दिखाई देता है इसलिए उसकी सांस्कृतिक परम्पराओं को तो नेपथ्य में जाना ही है। अगर हम कवि सम्मेलन को एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व आवश्यक सांस्कृतिक अनुष्ठान मानते हैं तो उसकी परम्परा से जुड़ी हुई सभी बातों पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना होगा। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता भी वह अत्यन्त महत्वपूर्ण बिन्दू है जिसपर ध्यान दिया जाना जरूरी है। जिन क्षेत्रों में कवि सम्मेलन को एक सांस्कृतिक अनुष्ठान माना जाता है, वहाँ आज भी इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कौन करेगा? कवि सम्मेलन के प्रारम्भ में ही बाकायदा मंच से किसी वरिष्ठ कवि का नाम अध्यक्षता के लिए प्रस्तावित किया जाता है तथा सामान्यतः सभी ध्वनिमत से एक साथ उस प्रस्ताव का अनुमोदन करते हैं। श्रोतागण भी करतल ध्वनि कर इस निर्णय पर हर्ष व्यक्त करते हैं। ऐसा हो जाने के पश्चात् संचालक के नाम की घोषणा करके कवि सम्मेलन को संचालक के कार्यभार में सौप दिया जाता है। संचालक भी अध्यक्ष व मुख्य अतिथि को सम्बोधित करते हुए ही अपना वक्तव्य प्रारंभ करता है। इसी अवसर पर वह उनके सम्मान में कुछ कहता भी है ताकि श्रोता यह जान सकें कि इस कवि सम्मेलन की गरिमा का स्तर क्या है। ऐसे में उन्हें किसी प्रकार का आचरण काव्य श्रवण के दौरान करना है?

''कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करने वाला व्यक्ति सामान्यतः बहुत महत्वपूर्ण होता है। कवि भी उसे रिझाने के लिए उसकी अभिरुचि के अनुरूप काव्य पाठ करने का लोभ संवरण नहीं कर पाते। ऐसे में अगर वह चुटकलों पर रीझता है तो कवि सम्मेलनों में चुटकुलों की झड़ी लग जाती है। नए श्रोताओं पर उसका प्रभाव यह पड़ता है कि वे चुटकलों को कविता समझने लगते है। इसपर लगाम लगाने के लिए कवि सम्मेलन में सिर्फ उस विद्वान-विभूति को ही अध्यक्ष के आसन पर विराजमान करना चाहिए जिसमें कविता और कवि-सम्मेलनों की समझ हो। जरूरी नहीं कि कवि-सम्मेलनों का अध्यक्ष कवि या साहित्यकार ही हो। ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में अपनी विद्वुता की साख को स्थापित करनेवाला कोई भी विद्वान कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करने की पात्रता रखता है। ऐसा इसलिए कि विद्वनों का सभी आदर करते हैं तथा उनके समक्ष जुठा आचरण करने से सभी बचते हैं। आज की परिस्थितियों में कवि सम्मेलन की अध्यक्षता के महत्व को समझना व उस पर विशेष ध्यान दिए जाने की

जरूरत है ताकि कवि सम्मेलनों की गरिमा को बचाया व बढ़ाया जा सके।"[2]

कवि सम्मेलन के मंच पर कवि अपनी उपस्थिति किस प्रकार देते हैं यह एक महत्वपूर्ण बात है। कवि प्रायः इस बात को वांछित गम्भीरता से नहीं लेते लेकिन श्रोता समुदाय कवि की उपस्थिति के प्रत्येक पहलू को बारीकी से देखता है। कवि की वेशभूषा से लेकर उसके बैठने के स्थान और तरीके से सम्बन्धित प्रत्येक बात श्रोताओं के लिए संस्कारक होती है।

हिन्दी साहित्य की वाचिक परम्परा में इन सब बातों का बड़ा महत्व है कि कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कौन कर रहा है? मंच पर उसका आसन कहाँ है? अध्यक्ष के आस-पास विराजमान कवि अध्यक्ष की ख्याती के अनुरूप हैं कि नहीं? संचालक का आसन कहाँ है? उस स्थान पर विराजमान होकर संचालक श्रोताओं और कवियों के मनोभावों को सहजतापूर्वक माप पाता है कि नहीं? नवोदित कवि मंच पर उपलब्ध आसनों में कहीं विराजमान होते हैं। मंच पर विराजमान कवि का कवि-सम्मेलन में कद क्या होगा इस बात का अनुमान श्रोता उसके बैठने के स्थान और तरीके को देखकर लगा लेते हैं। परम्परा के अनुसार कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे कवि या अतिथि के लिए मंचस्थ आसनों की कतार में बीचो-बीच का स्थान आरक्षित होता है। अध्यक्ष के समकक्ष योग्यता रखनेवाले अन्य कवि अध्यक्षीय आसन के आस-पास विराजमान होते हैं। उसके आगे बैठते हैं नवोदित कवि। संचालक का आसन प्रायः मंच के दाहिनी या बायीं ओर अलग से होता है। ऐसा होने पर श्रोता कवियों के बारे में ठीक-ठाक अनुमान लगा लेते हैं।

अब अधिकांश कवि सम्मेलन एक दौर के होते हैं कुल मिलाकर लगभग तीन घण्टे में मंचस्थ कवियों के काव्य-पाठ का एक दौर पूरा होता है। एक दौर पुरा होने के साथ ही अक्सर कवि सम्मेलन का समापन भी हो जाता है।

कवि सम्मेलन में काव्य पाठ करता हुआ कवि जब अपनी मौलिक बेचैनी के सम्पूर्ण सौदर्य को श्रोताओं पर न्यौछावर करता है तथा श्रोता उसे अनुपम उपहार की भाँति ग्रहण करके आत्मसात कर लेते हैं तब ऐसा लगता है कि जैसे उस रात पृथ्वी पर स्वर्ग का अवतरण हो गया हो। अलौकिक अनुभूतियों की दिव्य अभिव्यक्ति का भव्यतम परिवेश में उन्मुक्त विचरण कल्पनातीत आनंद का सृजन करता हुआ समूचे वातारवण को धन्य कर देता है। ऐसे मनोहर क्षण भाग्यशाली कवियों और श्रोताओं के ही हिस्से में आते हैं।

प्रत्येक कवि सम्मेलन कवियों और श्रोताओं से ज्यादा आयोजकों की मूल्यवान धरोहर होता है। कविता कवि की कृति है तो कवि सम्मेलन आयोजक की। वह मंच सज्जा से लेकर श्रोताओं के बैठने की व्यवस्था तक में प्रत्येक बिन्दु पर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को झौंक देता है। जिस तरह कवि अपने कविता संग्रह को संग्रहणीय क्रांति बनाने का भरसक प्रयास करता है वैसे ही आयोजक भी कवि सम्मेलन को यादगार कार्यक्रम बना देने के लिए एड़ी से लेकर चोटी तक का जोर लगा देता है। कुल मिलाकर वह रसोपासना के निमित्त लिखी ऐसी पुस्तक का स्वरूप ग्रहण कर लेता है जिसके फ्लेप पर संयोजक का वक्तव्य मुद्रित होता है तथा प्राक्कथन लेखन में संचालक अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा लगा देता है। कवि, आयोजक, संयोजक और संचालक मिलकर उसमें ऐसी–अनुभूतियों का समावेश करते हैं कि श्रोताओं की सकारात्मक भावनाओं के स्पर्श मात्र से वे जीवन्त होकर समारोह में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति के मानस पटल पर स्थायी रूप से सहजतापूर्वक अंकित हो जाती है।

मानव जीवन का सही प्रतिबिम्ब ही कवि सम्मेलन है। यह वह आईना है जिसमें समाज अपने वास्तविक स्वरूप का दर्शन करता है। कभी आँखों में आँसू भर के तो कभी मुस्कान को अट्टहास में बदल कर। आँसू, मनुष्य की आँखों से जन्म पाते हैं। गालों पर जिन्दगी बिताते हैं तथा होठों पर आकर विलीन हो जाते हैं। कवि सम्मेलन रस की वह नदी है जो आँसू और मुस्कान नामक दो किनारों के बीच बहती है। जब वह पूरे वेग से बहती है तो वीर रस साकार होता है तथा जब वह मन्द गति से बहती है तो शृंगार रस और जब वह कहीं बहती है और कही नहीं बहती तो हास्य रस के दर्शन होते है। हम कामना करते हैं कि इस रस–सारिता का प्रवाह जारी रहे।

किसी भी कवि सम्मेलन को सुनकर आत्मसात कर लेने पर श्रोताओं को अपार सुख की अनुभूति होती है। महानगर का निवासी जैसे किसी बहती नदी के किनारे बैठकर सबकुछ भूल–सा जाता है वैसे ही कवि सम्मेलन में श्रोता काव्यपाठ को आत्मसात करते हुए अपने आपको भूल जाता है। इस युग में मनुष्य की ऐसे विलक्षण सुख की अनुभूति करानेवाली यह एकमात्र विधा है। यही वजह है कि नेताओं को सुनने के लिए भीड़ इकट्ठी की जाती है लेकिन कवियों को सुनने के लिए आज भी श्रोता स्वयं सफूर्त प्रेरणा से एकत्रित हो जाते हैं। वर्तमान व्यवस्था ने जब लोगों को अपने–अपने घरों में लगभग नबरबन्द

कर दिया है तब कवि सम्मेलन की ही महिमा है जो आज भी लोगों को घरों से खींचकर समारोह-स्थल तक पहुँचतने की प्रेरणा प्रदान करती है तथा इन्हें अपनी सामूहिकता का बोध कराती है। कवि सम्मेलनों की यह अतिरिक्त सफलता एवं सार्थकता है कि वह मनुष्य के सामाजिक सरोकारों को जीवित रखे हुए है।

कवि सम्मेलन में आकर लोग सिर्फ कवियों के शब्दों में निहित भावों तक पहुँचकर अपने आप को भुला रातभर बैठ रहे तथा आग्रहपूर्वक कवियों का काव्य सुनते रहे और सराहते भी रहे। कभी सन्नाटा कभी ठहाके तो कभी तालियों का तूफान। ऐसा मंजर है किसी अन्य विधा के पास? कवि सम्मेलन सचमुच ही एक विलक्षण विधा है। यह वह रस-सरिता है जिसमें डुबकियाँ लगाते रहने से मनुष्य का मन ही नहीं भरता। अनेक कारणों से कवि सम्मेलन महत्वपूर्ण होते जा रही है। इसमें आनयेच्छु श्रोता आनन्द पाते हैं तो मनोरजंनाकांक्षी मनोरजंन। यह श्रोताओं की अभिरुचि को परिस्कृत करता हुआ सभ्य और संवेदनाशील समाज की रचना करता है। कवि जिस वर्ग पर प्रहार करता है स्वयं वह वर्ग भी ठहाके लगाते हुए कवियों की वाणी को स्वीकार करता है। समाज के ताकतवर वर्ग में धैर्य का ऐसा संचार करनेवाली यह विधा इकलौती है।

यह भी सुखद आश्चर्य का विषय है कि कवि सम्मेलन सिर्फ भारतीय भाषाओं की ही अनमोल निधि है। हिन्दी भाषियों के लिए जो कवि सम्मेलन है वही उर्दू भाषियों के लिए मुशायरा। पंजाबी भाषा में यह विधा कवि-दरबार के नाम से जानी जाती है, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, पंजाबी, राजस्थानी, ब्रज, अवधी, मौथिली, गुजराती, मालवी, बुन्देली और मराठी आदि भाषाओं को बोलने-समझने वाले लोग लगभग एक सदी से अपनी-अपनी भाषा में कवि सम्मेलनों को आयोजन करते रहे हैं। किसी भी भाषा का सबसे जीवन्त, सफल और सार्थक आयोजन का नाम कवि सम्मेलन है।

कवि सम्मेलनों की एक महत्वपूर्ण विशेषता और भी है जो इसकी प्रासंगिकता में चार चांद लगाती है। वह यह कि इस विधा में विचार स्वयं मनोरंजन के कन्धों पर सवार होकर जन-जन तक पहुँचते हैं। यह किसी भी विषय पर जागरुकता पैदा करने का सर्वोत्तम उपकरण है। इतिहास साक्षी है कि विभिन्न नदियों के किनारे विभिन्न सभ्यताएँ न केवल आबाद हुई बल्कि खूब फूली-फलीं। कवि सम्मेलनों की रस-सरिता भारतीय भाषाओं में इन्हीं सभ्यताओं

के परिष्कार के निमित प्रवाहित हो रही है। हमारा दायित्व है कि हम अनमोल विधा को लिफाफा लोलुपता से मुक्त कर इसे काव्य और साहित्य और समाज की धरोहर के रूप में स्थापित करें।

कवि सम्मेलनों ने जहाँ एक ओर हिन्दी कविता को सामान्य लोगों के बीच प्रचारित होने की समाभवनाएं पैदा कीं, वहीं इसमें लोकाग्रही संचेतना के स्वर भी मुखर हुए हैं। समग्र हिन्दी मंचीय कविताओं में राजनैतिक विद्रूपताएँ, सामाजिक असुंतलन एवं व्यक्ति की सामयिक दुर्दशा का यथार्थ सामने आया है। आम–आदमी के सत्य को उद्घाटित करने वाली ये कविताएँ, इसीलिए आम आदमी के बीच प्रख्यात रही है।

गायन एवम् वाचन की विविध शैलियाँ

मंचीय कवियों की काव्य प्रस्तुतियों के विविध रूप देखे जा सकते हैं। जिनमें प्रत्येक मंचीय कवि अपनी काव्य प्रस्तुति के लिए किसी विशिष्ट शैली का प्रयोग करता रहा है। अलग–अलग काव्य विधाओं के अलग–अलग रूप मंच पर देखे जा सकते हैं। इनमें प्रमुख प्रस्तुति के रूप इस प्रकार हैं।

लोक रागों के आधार पर "सस्वर गायन"

कुछ कवि रागों को काव्य का आधार बनाकर रचनाएं प्रस्तुत करते रहे हैं। इनके गीत सहज रूप से गेय तथा लोकगीतों के आधार पर प्रख्यात हुए हैं। इन कवियों की काव्य प्रस्तुतियाँ आंचलिक परिवेश से जुड़ी रही हैं। जिनमें ब्रजक्षेत्र, मैथिली, राजस्थानी, मारवाड़ी और पूर्वांचल उत्तर प्रदेश की जनपदीय गेय शैलियों का प्रभाव परीलक्षित होता है। इन कवियों में विशेष रूप से कवि निर्धन, शिवकुमार, चंचन, कवि क्रिष्णा, देवी द्विज आदि प्रख्यात रहे हैं। निर्धन जी के गीत का शीर्षक है–

हम तो रहे भैया, रहे भैया गाँव के,
नदीया किनारे के, पीपर की छाँव के

जनवादी सभा या समारोह में नारेबाजी के रूप में आह्वान गीतों का मंचीय पाठ

यदा कदा जब किसी विशेष प्रयोजन पर प्रदर्शन या जुलूस के रूप में अथवा किसी लोक–पर्व के अवसर पर जब कोई विशिष्ट कवि उस समारोह में सम्मिलित होकर काव्य पाठ करता है तो वह एक आह्वान गीत बन जाता है। इसमें सोहनलाल द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर, देवराज दिनेश आदि कवि

प्रख्यात रहे हैं। पार्शदजी का झंडा गीत भी इस क्रम में संलग्न है जैसे–

झंडा ऊँचा रहे हमारा
विजय विश्व तिरंगा प्यारा
अथवा
कदम, कदम मिलाए जा
खुशी के गीत गाए जा
ये जिंदगी है कौम की
तू कौम के लुटाए जा।

बाद में इन्द्रीवर और प्रदीप जैसे कवियों ने चलचित्र के माध्यम से भी अनेक आह्वाहन गीत अपनी ही आवाज में प्रस्तुत किए।

प्रदीप जी का गीत है –

हम लाए हैं तूफान से कश्ती निकाल के
इस देश को रखना मेरे बच्चो संभाल के
अथवा
संभल के रहना अपने घर में छुपे हुए गद्दारों से

जैसे अनेक गीत इस क्रम में समाहित किए जा सकते हैं।

ओजपूर्ण वीर–रस की कविताओं का वाचन

इस प्रकार के गीत राष्ट्रीय–भावना से जुड़े हुए और शत्रु को ललकारते हुए ओजपूर्ण स्वर के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं। रामधारी सिंह 'दिनकर', 'निराला', श्याम नारायण पांडे, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, रामकुमार चतुर्वेदी, राजेश दीक्षित, विष्णु विराट आदि की कविताएँ इसी प्रभाव भूमि से संलग्न हैं।

रामधारी सिंह दिनकर की कविता –

मेरे नगपती, मेरे विशाल

वीर रस की कविता है। इसी प्रकार नागार्जुन की कविता –

ऐ मेरे देश, संभाल अपना वेश
बिगाड़ मत परिवेश, भाग मत परदेश

या फिर निरालाजी की कविता 'अबे ए गुलाब' या फिर 'राम की शक्ति पूजा' ओज और वीर स्वरों में ही संयोजित हैं।

चतुष्पदी कविताओं का ओजस्वी वाचन

इस विधा में हिन्दी की रुबाइयाँ एवम् मुक्तक छंद ज्यादा प्रभावित रहे हैं। बाद के कवियों ने इसी क्रम में दोहे भी प्रस्तुत किए हैं। रुबाइयों का सर्वश्रेष्ठ वाचन हिन्दी के प्रसिद्ध कवि नीरज से प्रारंभ हुआ जिसे सूर्यभान गुप्त, रमाशंकर रसाल, राजेश दीक्षित, कुँवर बेचैन आदि ने अग्रसर किया।

इस क्रम में नीरज जी की रुबाइयाँ अत्यधिक लोकप्रिय और प्रभावक रही हैं। जैसे नीरज जी कहते हैं –

तन की हवस मन को गुनेहगार बना देती है,
बाग के बाग को, वीरान बना देती है,
भूखे पेट को देश–भक्ति सीखाने वालो
भूख इंसान को गद्दार बना देती है

सूर्यभान गुप्त की रुबाई है –

पंछी ये समझते हैं कि चमन बदला है
हँसते हैं सितारे के गगन बदला है
शमशान की खामोशी मगर कहती है
है लाश वहीं सिर्फ कफन बदला है।

इस प्रकार के अनेक प्रयोग काव्य मंचों पर सुने जा सकते हैं।

गजल विधा पर लिखी कविताओं का वाचन

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तथा इक्कीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में उर्दू और फारसी ग़ज़लों का प्रभाव हिन्दी पर इस तरह पड़ा की हिन्दी का गजल साहित्य एक अलग पहचान बनाकर सामने आ गया। हिन्दी ग़ज़लों के सर्वाधिक प्रसिद्ध रचनाकार, दुष्यंत कुमार रहे जिन्होंने हिन्दी शुद्ध ग़ज़लों को काव्य मंचों पर प्रतिष्ठित किया उनकी ग़ज़लों ने हिन्दी काव्य लेखन को एक नई दिशा प्रदान की जिसके प्रभाव से उनके बाद हिन्दी के सैंकड़ों गजलकार कवि प्रकाश में आए।

दुष्यंत कुमार कि पंक्तियाँ देखिए –

बाढ़ की संभावनाएं सामने हैं
और नदियों के किनारे घर बने हैं,

आपके कालीन देखेंगे कभी फिर
इस समय तो पाँव कीचड़ में सने हैं
आप को शायद हुई है गलतफहमी
हम नहीं हैं आदमी हम जुनजुने हैं।

हिन्दी की गजलें गेय रूप में भी प्रस्तुत की जा रही हैं और वाचन के रूप में भी प्रचलित रही हैं। दुष्यंत कुमार, नीरज, सूर्यभान गुप्त, कुँवर बेचैन जैसे रचनाकारों ने गजल को गीत की तरह प्रस्तुत किया है तो शिव ओम 'अंबर', सोम ठाकुर, राजेश दीक्षित आदि ने काव्य वाचन के रूप में अपनी गजलें प्रभावक ढंग से प्रस्तुत की हैं। दोनों ही विधाएँ लोकप्रिय और प्रख्यात रही हैं।

ग़ज़लों का एक दूसरा रूप मंचेतर भी रहा है जिसमें शास्त्रीय गायन के रूप में तथा फिल्म पटकथा के रूप में भी ये गजलें बड़े ही लोकप्रिय अंदाज में प्रस्तुत होती रही हैं। हिन्दी फिल्म ने गजलों को बहुत ही लोकप्रिय बनाने में मदद की है।

चतुष्पदी तथा परंपरित छंदों का वाचन

इस विधा में कथित सवैया, दोहा, चौपाई जैसे पारंपरिक छंदों का सस्वर गायन काव्य मंचों पर देखा जा सकता है। विशेषकर उनमें धनाक्षरी कविता, सवैया, छंद, दोहा, छप्पाई आदि का समावेश रहा है। इस प्रकार के काव्य वाचन में सोमठाकुर, माया गोविन्द, कुँवर बेचैन, राधा गोविन्द पाठक, सरिता शर्मा आदि का नाम उल्लेखनीय है। अशोक अंजुम जी का दोहा दृष्टव्य है–

हुई प्यास से अधमरी, काला पड़ा शरीर।
दिल्ली के दरबार में, नदिया माँगे नीर।।[3]

नवगीतों की नव विधा में गायन

हिन्दी काव्य की नवीनतम विधा नवगीत है। गीतों का ही या एक नवीनीकरण संस्करण है जिसमें नए विषयों को नए छंदों के माध्यम में नए अंदाज में प्रस्तुत किया जा रहा है। इनमें महेश्वर तिवारी, किशन सरोज, विरेन्द्र मिश्र, देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', कुँवर बेचैन, विष्णु विराट, मधुकर गौड़, सरिता शर्मा, वरुण चतुर्वेदी आदि के नाम प्रख्यात हैं।

किशन सरोज की गीत पंक्तियाँ देखिए –

वक्ष से लगाया, फिर छोड़ दिया,
झुककर फिर तन गई कमान,
किस–किससे मन की अब व्यथा कहें
भटकता दिशाओं में बान?[4]

इस प्रकार यदि हिन्दी मंचीय कवि संमेलनों का समग्र रूप से अवलोकन करें तो स्पष्ट होगा कि प्रायः सभी कवियों की वाचन विधाएं अलग–अलग ही रही है। गेय रचनाओं में शृंगार के गीत तथा नवगीत अधिक मुखर हुए हैं किन्तु साथ में राष्ट्रीय भावनाओं को लेकर वीर और जोश के गीत भी हम देखते हैं कि हिन्दी के काव्य मंचों पर वाचन की तथा गायन की अनेक विधाएँ प्रचलित हैं।

हास्य और व्यंग्य प्रस्तुति

इस विधा में कवियों के द्वारा अभिनय भी किया जा सकता है और वाचन में मनोरंजन भी प्रस्तुत किया जा सकता है। कहीं–कहीं विशुद्ध हास्य की कविताएँ बिना किसी भूमिका के लोगों की वाह–वाही अर्जित करती हैं तो कहीं व्यंग्यपूर्ण कविताएं समाज और राष्ट्र की अनेक बातों का रहस्यमय ढंग से उजागर करती हुई उनपर तीव्र प्रहार भी करती हैं। विशुद्ध हास्य कि कविताएँ प्रस्तुत करने वाले कवियों में काका हाथरसी, निर्भय हाथरसी, प्रदीप चौबे, बेढब बनारसी, बरसाने लाल चतुर्वेदी, धनचक्र मुल्यानी, सुरेश उपाध्याय आदि उल्लेखनीय हैं। व्यंग्यपूर्ण हास्य कविताओं के वाचन में माणिक वर्मा, शैल चतुर्वेदी, कैलाश गौतम आदि का नाम प्रख्यात रहा है।

यह तेवर प्रदीप चौबे की अंकित प्रस्तुति में देख सकते हैं –

पर्स नोटों से भरा होता है,
तो मरुस्थल भी हरा होता है।
अपनी पहचान अलग रखता है,
खोटा सिक्का भी खरा होता है।[5]

संदर्भ सूचि

1. आनन्ददायक पारिवारिक पत्रिका, कवि सम्मेलन समाचार, 15 जरवरी 2010, पृष्ठ 1

2 आनन्ददायक पारिवारिक पत्रिका, कवि सम्मेलन समाचार, 15 जरवरी 2010, पृष्ठ 2

3. अनुभूति, इंटरनेट वेब पत्रिका

4. धार बदल – किशन सरोज, नवगीत शिखर, संपादक देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' एवं शशि अलोक, प्रकाशक – गिरनार प्रकाशन, महेसाणा, पृष्ठ 32

5 हास्य कवियों की धमाचौकड़ी, संपादक – अशोक शर्मा, प्रकाशक – राधा पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 66